RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain College, Ara.
M.A. sem- III rd
Unit - I, CC-10

कल्हण:- कल्हण कश्मीरी इतिहासकार तथा विश्वविख्यात ग्रंथ राजतरंगिणी के रचयिता थे। उन्होंने यह रचना 1148 - 1149 के बीच संस्कृत में लिखी थी। यह ग्रंथ कश्मीर के इतिहास का लेखा-जोखा है। कल्हण एक प्राचीन भारतीय विद्वान और ब्राह्मण थे। कल्हण ने अपने इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाया था। उन्होंने राजाओं के चारित्रिक पतन और कश्मीरी लोगों के प्रपंचना पूर्ण जीवन का खुला उद्घाटन किया था।

'कल्हण की "राजतरंगिणी" की खास बातें —

- यह प्राचीन भारत का पहला प्रशस्ति ग्रंथ है।
- इसमें ऐतिहासिक प्रवाह और तथ्यों की उपेक्षा नहीं की गई है।
- इसमें भू-वैज्ञानिक युग से लेकर 12 वीं शताब्दी के कश्मीर का जिक्र है।
- इसमें कई शाही राजवंशों का लेखा-जोखा है।
- इसमें पौराणिक श्रोतों, अनुश्रुतियों, और मिलकों का भी इस्तेमाल किया गया है।
- इसमें राजनीतिक परिस्थितियों, आग, अकाल, खाद्यान की कीमत, कर-व्यवस्था और मुद्रा व्यवस्था का वर्णन है।
- इसमें राजकीय परिवार के भोजन और आम लोगों के भोजन का भी वर्णन है।
- इसमें कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन है।

→